

भूमण्डलीकरण एवं लीलाधर मंडलोई की कविताएँ

आशीष कुमार पाण्डेय

शोध छात्र,

श्रीमंत माधवराव सिंधिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

शिवपुरी, सम्बद्ध: जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,



भूमण्डलीकरण एक ऐसा शब्द है जिसके अन्तर्गत पूरा विश्व समाहित है। इसे समय की मजबूरी कहें या समय की माँग आज विश्व का प्रत्येक देश हरेक दूसरे देश पर निर्भर अवश्य है। वास्तव में भूमण्डलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वैश्विक दूरियाँ घट जाती है। एक देश का विकास दूसरे देशों पर निर्भर करने लगता है, जैसे— खाड़ी के देशों में आज किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न हो जाती है तो यह समस्या वैश्विक समस्या का रूप धारण कर लेती है। पर्यावरण को ही ले लें, यदि पर्यावरण किसी भी देश में असंतुलित होती है तो इसका असर सम्पूर्ण विश्व में हो जाता है। यही नहीं जो कुछ भी हम सोच सकते हैं या कर सकते हैं वह सब आज इसी भूमण्डलीकरण का हिस्सा है।

भूमण्डलीकरण शब्द नया जरूर है पर वास्तव में विश्व के प्रसार के साथ यह प्रतिफलित हुआ यदि भारतीय संस्कृति का आर्ष ग्रन्थ ऋग्वेद की माने तो इसमें भी एक जगह ऐसा उल्लेख मिलता है :

“इंद्रं मित्रं वरुणमग्नि माहुरथो दिव्यः सः सुपुर्णो—गुरुत्मान्,

एकं सदविप्रा बहुथा वदंति अग्नि यमः मातरिश्वानमाह । ॥१

अर्थात् ईश्वर एक है, सिर्फ नाम के फर्क है।

आज भूमण्डलीकरण शब्द भी इसी दौर से गुजर रहा है। भूमण्डलीकरण के लिए इस समय ग्लोबलाइजेशन, जगतीकरण, वैश्वीकरण, विश्वायन, नवसाम्राज्यवाद, नवउदारवाद, नवउपनिवेशवाद इत्यादि शब्दों का बहुधा प्रयोग किया जा रहा है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में औपनिवेशिक देशों द्वारा व्यापारिक और राजनैतिक लाभ प्राप्त करने के लिए ‘लुक टू ईस्ट’ की नीति अपनाई गई। फलतः इन देशों द्वारा औपनिवेशिक देशों के राजनैतिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को हस्तगत करने का प्रयास किया गया। भारत जैसा बौद्धिक सम्पदा एवं ‘सोने की चिड़िया’ कहा जाने वाला देश उनके जाते—जाते एक असभ्य और सपेरों के देश के रूप में उनके द्वारा प्रचारित किया गया। पर आज स्थितियाँ पूरी तरीके से बदल चुकी हैं। आज भूमण्डलीकरण प्रत्येक देश का अन्य देशों के साथ वस्तु, सेवा पूँजी, बौद्धिक सम्पदा, राजनयिक संबंध इत्यादि के आपसी आदान—प्रदान के रूप में परिभाषित किया जाता है।

विश्व बाजार, विश्व ग्राम जैसी अवधारणाएँ सामने उभर कर आ रही हैं। साहित्य भी इस भूमण्डलीकरण के दौर में पीछे नहीं है। शेक्सपीयर जॉन कीट्स, चेखव, वायरन, वर्टॉल ब्रेख्ट, फैज़ अहमद फैज़ काफ़का, तुलसीदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकार अब केवल किसी एक देश के या किसी एक भाषा मात्र के साहित्यकार नहीं कहे जा सकते हैं। अब इनकी संवेदनाएँ वैश्विक संवेदनाओं का रूप ले चुकी हैं। साहित्य में भूमण्डलीकरण, मानव मन की जिजीविषा और जीवन के प्रति उसके जुड़ाव की प्रबल अभिव्यक्ति है। अन्तर्रमहाद्वीपीय साहित्य का साम्राज्य धीरे—धीरे आकार ले रहा है। आज का साहित्यकार अब केवल क्षेत्रीय

समस्या या पारिवारिक विखण्डन पर ही नहीं सोचता, बल्कि उसका फलक तो विश्व समुदाय तक हो गया है। अमेरिका पर हमला हो या इराक में आतंकवादी घटना, नेपाल में भूकंप आए या जापान में सुनामी साहित्यकार की दृष्टि और उसकी सोच इन सभी वैश्विक घटनाओं की ओर केन्द्रित है।

लीलाधर मंडलोई भी भूमण्डलीकरण के कवि है। इनकी कविताएँ वैश्विक परिवेश में 'ग्लोबल पोइम्स' का रूप लेकर वैश्विक समस्याओं की ओर अग्रसर है। आदिवासियों की बात हो या मिल-मजदूरों की समस्या या फिर विदेश में रह रहे गिरमिटिया समुदाय की या फिर आतंक से जूझते विश्व समुदाय की बात हो मंडलोई अपनी लेखनी से कहीं भी नहीं चूकते। भूमण्डलीकरण के इस चकाचौंध ने विकास के मानकों के नए आयाम बनाए हैं। कवि की दृष्टि इन मानकों की ओर गड़ी हई है। वह विकासशील और विकसित समाज दोनों के मानकों को भलीभांति आँकता चलता है। जहाँ कहीं भी भूमण्डलीकरण के नाम पर जनता को बरगलाने की कोशिश की गई है वहाँ कवि की लेखनी भी आग उगलने लगी है :—

“जब उन्नत तकनीक आयात के रास्ते पर है और
बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के स्वागत में लहालोट हैं सरकार
नीति आयोग भला क्यूंकर सुने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के रुदन को
उनकी सफल सूची और आंकड़ों में
कम ज़र्फ जनता विश्वास नहीं कर रही
उन्हें नहीं दिखाई दे रहे
जगमगाते बाज़ार कीमती गाड़ियाँ, शॉपिंग माल्स,
आधुनिक सिनेमाघर भव्य हॉटल पंचसितारा, अस्पताल
और प्राइवेट विश्वविद्यालय”²

आज विश्व पर्यावरण प्रदूषण के दौर से गुजर रहा है। वैश्विक शुभचिंतकों एवं पर्यावरण शास्त्रियों के बीच पृथ्वी को बचाने के लिए लगातार बैठकें हो रही हैं। इनके उद्देश्य साफ है कि किसी भी तरह वैश्विक तापमान को नियंत्रित किया जाए। उसके बदले हमें किसी भी प्रतिदान के लिए तैयार रहना होगा। पर जब प्रतिदान की बात आती है तो विकसित और विकासशील देशों के बीच तलवारें खिंच जाती हैं। विकास के नाम पर लीपापोती शुरू हो जाती है। झगड़ों के बीच बहस में केवल कागजी खानापूर्ति ही दिखलाई पड़ती है। कवि की निगाह इन सब पर गड़ी है। वह इसके लिए सत्ता व्यवस्था के दुरुपयोग, राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी और शुचिता के नाम पर आदमी का गला धोंटने जैसी विकृतियों को जिम्मेदार मानता है। वादों के नाम पर जनता से ठगी करने वाले, चाहे उनका कद कितना ही बड़ा हो, कवि उसे नहीं छोड़ता :—

“एक बार झाड़ू उठाक सफाई करने वाले
कहाँ गये मालूम नहीं
अमूमन उनके होने की खबर
विदेशों में मिलती है
इस झाड़ू से चमत्कार की कोई उम्मीद नहीं
ना ये आगस्ता वेस्टलैंड की गन्दगी साफ कर सकती है
ना किंग फिशर एयरलाइंस की
बोफोर्स तक ना इसकी पहुँच है
ना व्यापम घोटाले तक”³

वैशिवक सुख शांति के लिए प्रत्येक राष्ट्रों के बीच खुद को लोकतांत्रिक घोषित करने की होड़—सी मची हुई है। दुनिया का हरेक देश खुद को सबसे बड़ा लोकतंत्र घोषित करने में लग गया। मानव, मानवतावाद, मानव की मुक्ति और मानव कल्याण जैसे मुद्दे इस लोकतांत्रिक राजनीति के केन्द्र में आ गए। पर क्या वास्तव में एक आम इंसान को इस राजनीतिक प्रतिद्वन्द्व ने मुक्त कर दिया है? लीलाधर इस पर भी चुप नहीं रहते :—

“ताकत एक कमाल कमजोरी है कि
राजनीति आकंठ त्याज्य गन्ध में
समझ नहीं पाते कि इतनी कलावादी
मनुष्य एक घोड़ा कि समायी जिसमें
करोड़ों अणुओं की बेहिसाब शक्ति
बँधा वह लेकिन उनके अस्तबल में ।”⁴

भूमण्डलीकरण ने मूल्यों की परिभाषा बदल दी है। आज के मूल्य समाज सापेक्ष न होकर खुदगर्जी को बढ़ावा दे रहे हैं। मानव संज्ञा शून्य होता जा रहा है। झूठ और मक्कारी मानवीय संवेदना को ढक लिए हैं। अब पेट की आग से उठकर मानव भौतिक वस्तुओं की तरफ आकर्षित हुआ है। परिणाम यह हुआ कि आज का मनुष्य झूठ के लबादे ओढ़े हुए चल रहा है। कवि इन्हीं मूल्यों के बदलते परिवेश को अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति देता है :—

“मेरा मूल्य है
मुझे लाया गया
मैंने नारे लगाये
नारे झूठे थे मैंने झूठ की कमाई से
आज रोटी खायी ।”⁵

मूल्यों के पतन से इंसान भटकाव की स्थिति में पहुँच गया है। आज एक मनुष्य, दूसरे मनुष्य के रक्त का प्यासा हो गया है। अब हिंसक जीव उतने डरावने नहीं लगते जितने कि मनुष्य डरावने लगते हैं। भूमण्डलीकरण ने छद्म विकास को बढ़ावा दिया है। दुनिया के तमाम देश इस छद्म विकास को पाने के लिए तरह—तरह के जतन कर रहे हैं जिससे वर्चस्व की लड़ाई वैशिवक युद्ध का संकेत दे रहा है। फलतः सभी देशों में परमाणु शस्त्रों की होड़—सी लगी है। पर प्रत्येक देश दूसरे को निशस्त्रीकरण की सलाह देता फिर रहा है। इन सबके बीच कवि की चिंता दूसरी ओर ही लगी है :—

“तमाम कोशिशों के बाद
धरती नहीं पचा पा रही
नामुराद प्लास्टिक
और अब परमाणु कचरे के इस्तकबाल में”⁶

भूमण्डलीकरण के दौर में लीलाधर ने आदिवासियों की समस्या को भी उठाया है। इन्होंने समुद्र द्वीप और उनमें बसने वाले आदिवासी—जनजातियों के बारें में जानने का प्रयत्न किया। और उन की मूलभूत समस्याओं को साहित्य के माध्यम से वैशिवक स्तर पर लाने का प्रयास करते हैं। आदिवासी जीवन के संघर्ष को वे अपनी कविताओं में ढालने से भी नहीं चूकते। अपने पहले कविता संग्रह ‘घर—घर घूमा’ में वे आदिवासी जीवन पर दो दर्जन से अधिक कविताएँ लिख चुके हैं। उनकी कविताओं से स्वर आदिवासी जीवन की दुर्दम परिस्थितियों को सहेजने के लिए पर्याप्त है :—

“इस दृश्य से बाहर
 न कुआँ
 न नदी
 और न मीठा झरना
 और हजारों—हजार आदिवासी
 संघर्षरत अँधेरे द्वीप वनों में।”⁷

इस प्रकार लीलाधर मंडलोई अपनी कविताओं के माध्यम से भूमण्डलीकरण की चुनौतियों को उकेरने में सफल रहे हैं। जीवन्तता उनके जीवन के पहलू का विशिष्ट अंग है। मजे की बात यह है कि मंडलोई जी कवि/लेखक के रूप में अपनी वैश्विक चिन्ताओं को लगातार अभिव्यक्ति दे रहे हैं। ‘ग्लोबल’ शब्द का प्रभाव इनके व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में देखें जा सकते हैं। अपनी प्रगतिशील सोच और प्रतिपक्षता की भूमिका से सदैव वेबाक् रहने वाले कवि हृदय को उन्होंने नवीन ऊँचाईयों तक पहुँचाया है। एक ढंग से कुछ अलग मिजाज और अनूठे शब्द। कविताओं में भूमण्डलीकरण के ताने—बाने को बुनने के क्रम में एक नई शैली को इजाद किया है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

-
- 1 ऋग्वेद (1–46–164)
 - 2 मंडलोई लीलाधर, भीजै दास कबीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2016 पृ०स० 104
 - 3 सामयिक सरस्वती अंक जुलाई—सितम्बर 2016, त्रैमासिक, पृ०स० 65–66
 - 4 मंडलोई, लीलाधर एवं गुरिया अनास्तासिया, उपस्थित है समुन्द्र, पृ०स० 24, संस्करण 2006
 - 5 मंडलोई, लीलाधर लिखे में दुख, पृ०स० 99, संस्करण 2010
 - 6 मंडलोई, लीलाधर मनवाबेपरवाह, पृ०स० 91, प्रथम संस्करण 2011
 - 7 घर—घर घूमा, पृ०स० 91, सं० 2010